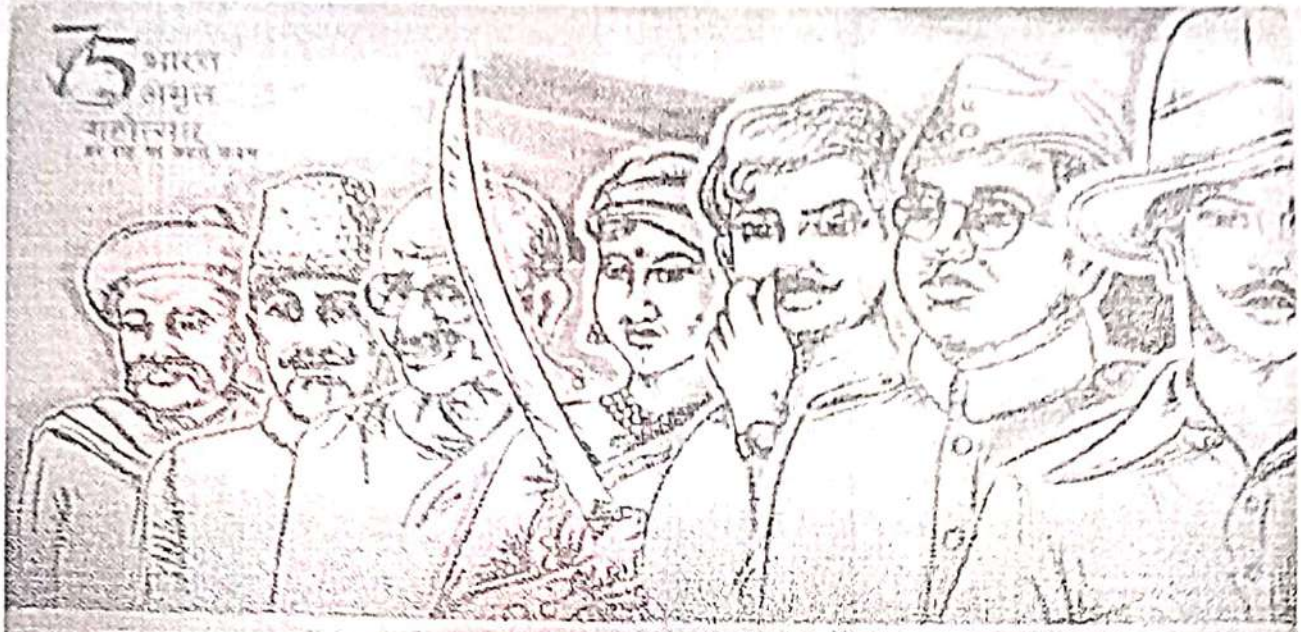

साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

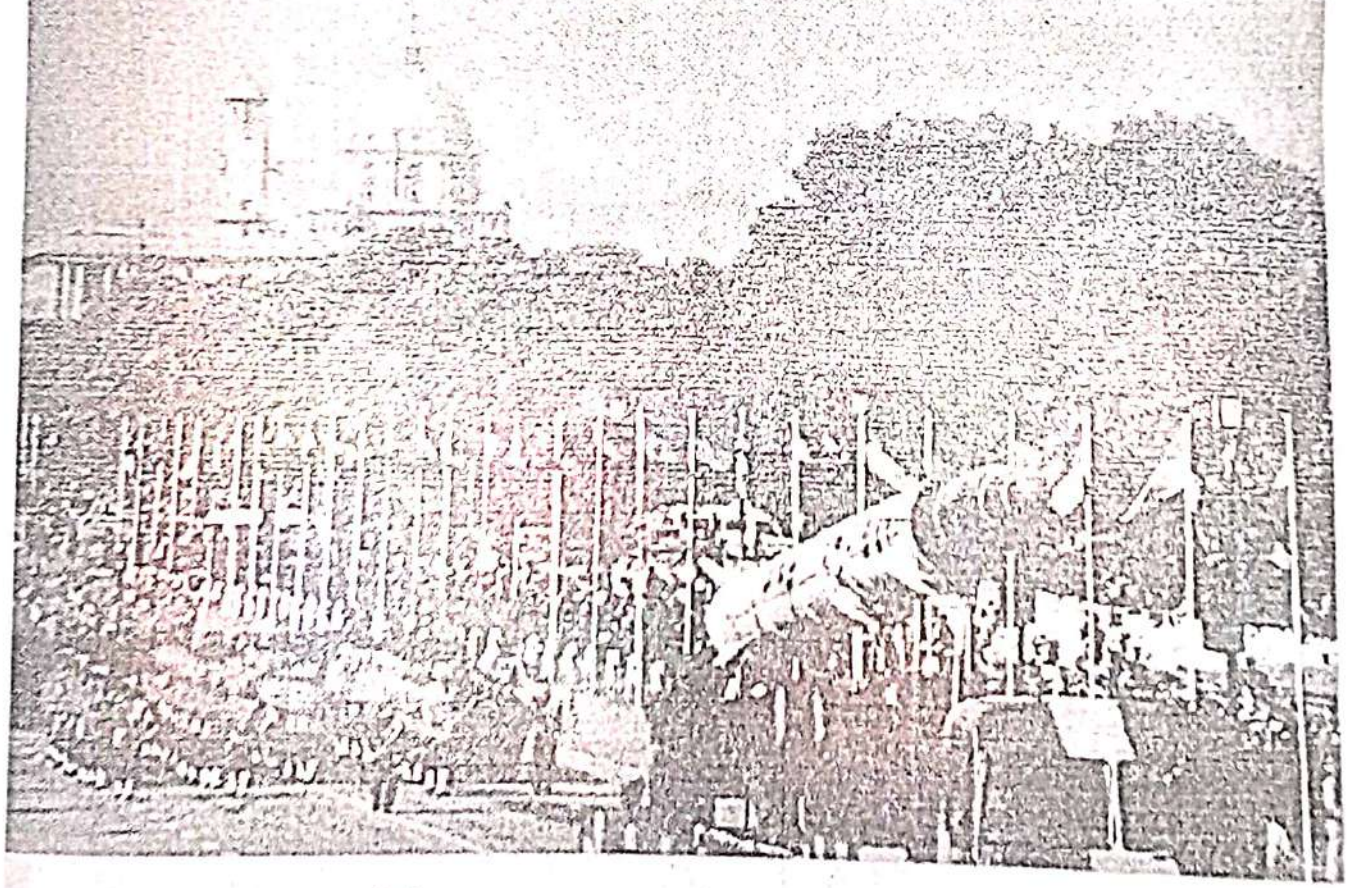

डॉ० घनश्याम भारती

डॉ० ओकेन्द्र

१५

साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

सम्पादक
डॉ० घनश्याम भारती
डॉ० ओकेन्द्र

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र ५

१. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय-चेतना १५
डॉ० घनश्याम भारती, पूजा शर्मा

२. स्वामी विवेकानंद और राष्ट्रवाद के प्रति उनका विशेष अनुराग २३
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० गीता

३. आधुनिक हिंदी और तेलुगु कविता में राष्ट्रवाद ३०
डॉ० पंडित वन्ने

४. राष्ट्र के नव-निर्माण में मैथिलीशरण गुप्त जी का योगदान ३५
डॉ० शोभना कोक्कड़न

५. राष्ट्रीय एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल की भूमिका ४६
डॉ० यशवन्त यादव

६. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी और राष्ट्रवाद ५२
डॉ० रिमता कुमारी

७. डॉ० भीमराव अम्बेडकर और भारतीय संविधान निर्माण ६३
डॉ० जयदीप महर

८. भगत सिंह का बलिदान और हमारे शैक्षिक मूल्य ७१
स्मृति चौधरी

९. स्वराज्य सौदामिनी ७५
डॉ० राजश्री धर्माधिकारी

१०. भारतीय महिलाओं (वीरांगनाओं) का देश की आजादी में योगदान ८४
डॉ० ममता गोखे (पंड्या)

११. राष्ट्रीय एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका ८९
डॉ० उज्वला अशोक राणे

१२. हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना ९४
प्रसादराव जामि

१३. भारतीय महिलाओं (वीरांगनाओं) का देश की आजादी में योगदान १०१
सुनीता प्रयाकर राव

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

सम्पादक

डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN 978-93-92611-68-1

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Sahitya Mein Rashtriya Chetna
Edited by Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra

८

भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय जागरण की प्रेरक शक्तियाँ और सामयिक परिवेश

—डा. शोभना [illegible]

किसी भी काल की रचनाओं में प्रवेश करने के पूर्व उस काल के वातावरण का सर्वेक्षण करना उचित होगा, जिसमें समकालीन रचनाओं का विकास हुआ होगा। वैसे हर एक रचनाकार पर तत्कालीन सामाजिक जीवन का प्रभाव पड़ता है और वह अपनी जनता के साहित्य की पूर्व परंपरा से मुक्त नहीं रहता। अतः देश के सामाजिक तथा राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में ही उनकी राष्ट्रीयता का सम्यक परिज्ञान सम्भव है।

यद्यपि साहित्य–सर्जना का प्राथमिक ध्येय समाज का सुधार या सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना नहीं है, तो भी देखा जाता है कि प्रायः सामाजिक वातावरण साहित्य की प्रवृत्तियों की दिशा निर्दिष्ट करने में एक निर्णायक वस्तु रहता है। सामाजिक जीवन का स्वरूप और आवश्यकतायें समय समय पर विविध रूपों में और विविध मात्राओं में साहित्य पर अपना प्रभाव छोड़ती आ रही हैं। भारतेंदु युग भारत के राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में ही आंदोलन का युग न था, यह युग भारतीय जनता की चिन्तन परंपरा में भी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों को प्रेरणा देनेवाला था, और संपूर्ण भारतीय वाङ्मय में अनेकानेक अभूतपूर्व प्रवृत्तियों और अंगों का पोषण करनेवाला था। इस युग की भारत की संपूर्ण साधनाओं पर दृष्टि डालें तो इस आंदोलन का व्यापक रूप दृष्टिगत होगा।

शताधिक वर्षों के ब्रिटिश शासन ने हमें अन्तर्निरीक्षण के लिए विवश किया। हम अपने सामाजिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था, दार्शनिक दृष्टिकोण और सामान्य चिन्तन पद्धित पर पुनर्विचार करने की

श्री सत्य नारायण, प्राचार्य एवं विष्णु दत्त शर्मा, प्रवक्ता (श्री संस्कार टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, बस्सी, जयपुर)